श्री कल्कि बाल वाटिका

मासिक पत्रिका

मास दिसंबर 2013 मूल्य 10 रु

आश्चर्यजनक किन्तु सत्य अब भगवान श्री कल्कि जी दिसम्बर 2013 में तीन मन्दिरों में विराजेंगे 2

जब शंकर भगवान ने माँ पार्वती के कहने पर रहने को सोने की लंका बनवाई 3

देश गुलाम कैसे बनता है ? 4

21 दिसंबर को आओ चलें गिरिराज जी गोवर्धन में कन्हेया श्री कल्कि के दर्शन को 3

ग्रीन पार्क में सुश्री राज गोयल एवं नोएडा बाल वाटिका में सुश्री मुक्ता शर्मा के तत्वाधान में 10 नवंबर 2013 को श्री कल्कि सहस्त्रनाम के 11 कुंडीय यज्ञ का बेहतरीन आयोजन 5

सम्भल चामुंडा मन्दिर में 1 दिसम्बर सुप्त तीर्थ जागरण अभियान के अंतर्गत सोम तीर्थ गऊ तीर्थ एवं सुदर्शन तीर्थ के लिये सहस्त्रनाम यज्ञ 5

शादी की रुकावट के लिये हवन व भूखों को खाना 5

पेट नर्म और माथा ठंडा 6

श्री कल्कि बाल वाटिका संस्कार रोपण कार्यशालाएं

दिल्ली विश्वविद्यालय	29 दिसंबर
पटपड़गंज	29 दिसंबर
यमुना विहार	8 दिसंबर
पंजाबी बाग	29 दिसंबर
गगन विहार	15 दिसंबर
महावीर नगर	22 दिसंबर
मॉडल बस्ती	15 दिसंबर
नोएडा-कुंडीय यज्ञ	22 दिसंबर
ग्रीन पार्क-कुंडीय यज्ञ	29 दिसंबर

मामाजी अनुभव के अर्थों से डराते हैं- (सुश्री इंदू बंसल) अगले अंक में पढ़ें

कुछ तो लोग कहेंगे लोगों का काम है कहना आभार: रश्मि गुप्त 9873345859

आश्चर्यजनक किन्तु सत्य भगवान श्री कल्कि दिसम्बर 2013 में तीन मन्दिरों में विराजेंगे

मूर्ति स्थापना और उसका महत्व- आज श्री कल्कि भगवान की लीला बड़ी तेजी से फैल रही है। पिछले चार महीनों में भगवान श्री कल्कि की विभिन्न स्थलों पर 15 मूर्तियों की स्थापना हुई, अर्थात भगवान श्री कल्कि की विजय स्तंभ की तरह 15 छावनियों का निर्माण। हम यह कल्कि जी के **मंदिर नहीं बना रहे हैं** बल्कि कलियुग से हो रहे कल्कि जी के **युद्ध की छावनियाँ स्थापित कर रहे हैं।** श्री कल्कि जी का थाना तहसील बैठा रहे हैं। 9 लाख वर्ष पूर्व अगस्त मुनि ने श्री कल्कि सहस्त्रनामावली को लिखा है **श्री कल्कि मन्दिर कल्प वृक्षाय नमः**। आज कलियुग की काली (राक्षसी) शक्तियाँ मन्दिरों के तेज को भी क्षीण कर रही है। जब कल्कि जी का श्री विग्रह किसी भी मन्दिर को स्पर्श करता है तो वहाँ अपने आप प्रतिष्ठित सभी देवी देवताओं का तेज बढ़ने लगता है और भक्त की मुरादें ज्यादा तेजी से पूरी होने लगती हैं।

जून अंक में आपने पढ़ा एक भक्त श्री रोहित गुप्ता को दिखाए गए स्वप्नानुभव में प्रभु श्री कल्कि ने स्वयं बताया कि जब किसी **धार्मिक स्थल की शक्तियों को बढ़ाना होता है तो वहाँ पर कल्कि जी की छावनी बन जाती है** और भगवान श्री कल्कि के वे प्रिय भक्त जो तन मन प्राण से सच्ची श्रद्धा के साथ भगवान श्री कल्कि का काम करने के लिये तत्पर रहते हैं उनके शरीरों में भगवान श्री कल्कि की शक्तियों द्वारा शक्ति ट्रांस्फर की जाती हैं और वे शक्तियाँ कल्कि जी का कार्य पूरा करा कर चली जाती हैं। **साधुवाद के पात्र हैं वो भक्त जिन पर भगवान श्री कल्कि की कृपा होती है और जिन्हें कमांडर्स बनाकर भगवान श्री कल्कि की शक्तियाँ उनसे मूर्ति स्थापना का अति विशिष्ट कार्य संपन्न कराती हैं।**

संयोजिका- सुश्री इंदु बंसल(011-32448401)लिपिका- सुश्री इंदु गुप्त

प्रस्तुत है चमत्कारी श्री कल्कि जी की चार मूर्तियों की स्थापना कब कैसे ?

6 दिसम्बर बृहस्पतिवार 2013 को श्री गोलू देव महाराज का मन्दिर, भुवाली, घोड़ा खाल (नैनीताल से 9 कि.मी. पहले)
सम्पर्क सूत्र- श्री मनोज पाण्डेय- 09711661029 श्री अनुज रस्तोगी- 09891212606

6 दिसम्बर बृहस्पतिवार 2013 को श्री श्याम बाबा मन्दिर, गल्ला मण्डी, रुद्रपुर उतराखण्ड
सम्पर्क सूत्र- किसी भी जानकारी के लिए- श्री अजय अग्रवाल (मामाजी) 09837029853

7 दिसम्बर शुक्रवार 2013 को श्री शिव हनुमान मन्दिर, आर टी ओ रोड, कुसुम खेड़ा, हल्द्वानी, उत्तराखण्ड
सम्पर्क सूत्र- अन्य जानकारी के लिए- श्री अजय अग्रवाल (मामाजी) 09837029853

17 जनवरी शुक्रवार 2014 को बाबा भूतनाथ आश्रम, भूतनाथ मन्दिर, सैक्टर बी, इंद्रा नगर, लखनऊ- 226016 में
सम्पर्क सूत्र- मामाजी 07379066665

शोभा यात्रा—मूर्ति स्थापना पर होने वाला अनुमानित खर्च

पोस्टर	3,000	माईक सिस्टम व पंडाल	2,500
कलेण्डर, साहित्य, चित्र, शोभायात्रा व तीर्थ स्थल में वितरण हेतू	9,000	डी.जे. सिस्टम (शोभायात्रा)	6,500
शोभायात्रा ट्रैक्टर बग्घी किराया	3,000	प्रसाद (खाना) भण्डारा	30,000
फूलों की सजावट	3,500	पूजन सामग्री	8,000
बैंड	6,000	दक्षिणा 3 ब्राह्मण	7,100
नपीरी-ताशा	3,000	पोशाक	2500
वीडिया कवरेज व फोटोग्राफी	3,000	भगवान श्री कल्कि का श्रृंगार सामग्री	2,000
		पूजा के बर्तन प्रतिदिन काम में आने वाले	900

भगवान विष्णु के मन्दिर निर्माण अथवा प्राण प्रतिष्ठा में जो भी सहयोग देता है उसकी सात पीढ़ियों को कालान्तर में मोक्ष की प्राप्ति होती है -अग्नि पुराण

■ आप अपना सहयोग उपरोक्त सत्कार्यों में किसी एक मद में पूरा या हिस्से में देना चाहे तो आपके नाम से अथवा गुप्त सहर्ष स्वीकार कर के उसी मद में लगाया जाएगा ■ सहयोग के हिसाब से अनुमानित मदों को घटाया बढ़ाया जा सकता है

■ आपकी उपस्थिति हमारे लिए आपके सहयोग से भी ज्यादा अमूल्य है

■ आप अपना बहुमूल्य सहयोग नीचे लिखे किसी भी मूर्ति स्थापना प्रभारी को भेज/फोन पर बता सकते हैं

श्री मनोज पांडे	सुश्री अलका गोयल	सुश्री साक्षी गुप्त	सुश्री इंदू बंसल	श्री अजय अग्रवाल	सुश्री मेघना गोयल
09212703815	09811281271	09310833445	011-32448401	09837029853	09136377829

जब शंकर भगवान ने माँ पार्वती के कहने पर रहने के लिये सोने की लंका बनवाई

एक समय की बात है माता पार्वती भगवान शंकर से बोलीं, ''हे प्राणनाथ! आप संसार के स्वामी होते हुए भी वन-वन भटकते रहते हैं और इसी कारण मैं भी आपके साथ वनों में भटकती रहती हूँ जबकि सभी देवता अपनी पत्नियों को महलों में रखते हैं।''

माता गौरी की यह उल्हाने वाली बातें सुनकर एक बार आखिर भगवान शिव शंकर बोले, ''अगर ऐसी बात है तो मैं तुम्हें स्वर्ण निर्मित महल बनवा देता हूँ। यह महल संसार भर में अद्वितीय होगा।''

सोने का महल जब बनकर तैयार हुआ तो गृह प्रवेश की पूजा के लिये प्रकाण्ड पंडित विश्वश्रवा को बुलाया गया। विश्वश्रवा रावण के पिता थे। गृह प्रवेश की पूजा समाप्त होने पर भगवान शंकर ने विश्वश्रवा से पूछा, ''पंडित जी! आपको दक्षिणा में जो चाहिए सो मांग लो।''

विश्वश्रवा बोले, ''यह तो मेरे लिये बड़े सौभाग्य की बात है कि आपने गृह प्रवेश हेतू मुझसे पूजा करवाई। अब मुझे दक्षिणा में कुछ नहीं चाहिए। आपका आशीर्वाद ही पर्याप्त है।'' भगवान शंकर बोले, ''दक्षिणा में कुछ तो आपको लेना ही होगा वरना हमारी पूजा अधूरी रह जाएगी।''

इस पर पंडितराज विश्वश्रवा सकुचाते हुए बोले, ''हे प्रभु! दक्षिणा में जो भी मांगूगा क्या आप वह वस्तु वास्तव में मुझे दे देंगे?'' भोले बाबा ने हां कर दी। विश्वश्रवा बोले तो मुझे दक्षिणा में इस सोने के महल को ही दे दीजिए। विश्वश्रवा का इतना कहना था और शंकर भगवान ने मुस्कराते हुए तथास्तु कह दिया और माता पार्वती के लिये बनवाया गया स्वर्ण का महल विश्वश्रवा को दक्षिणा में दे दिया। बाद में यह स्वर्ण निर्मित महल लंका के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

जब माता गौरी को इस बात का पता चला तो वे आग बबूला हो गईं और क्रोधित होकर उन्होंने विश्वश्रवा को श्राप दिया, **''हे लालची ब्राह्मण! तूने मुझसे यह महल छीन लिया है परन्तु जा तेरी आने वाली पीढ़ी इस महल का उपयोग नहीं कर सकेगी, तुम्हारा सारा वंश एक साथ नष्ट हो जाएगा।''**

21 दिसंबर को आओ चलें गिरिराज जी गोवर्धन में कन्हेया श्री कल्कि के दर्शन को

बस अथवा कार से जैसे चाहें जाएं। बस का किराया प्रति व्यक्ति 300 रु जिसमें गिरिराज जी में रहने व भोजन की व्यवस्था शामिल है। कार से जाने वाले भक्तों के लिए मात्र 200 रु बाकी शर्तें पहले वाली (रास्ते में भोजन व पानी की व्यवस्था स्वयं की होगी)

प्रस्थान—21 दिसंबर सुबह 6 बजे

वापसी—22 दिसंबर दोपहर के खाने के बाद

बुकिंग व अधिक जानकारी के लिए— मनोज पांडे (9212703815) अलका गोयल (9811281271) मेघना गोयल (9136377829)

सत्संगमयी अनुभव गोष्ठी

दिनांक : शनिवार 14 दिसंबर 2013, 4 जनवरी 2014

स्थान : एम.के. हाउस, सी-2/8 अशोक विहार फेज-2 दीप सिनेमा के सामने, नई दिल्ली-52

समय : दोपहर 1 बजे से 5 बजे तक

संपर्क : श्री राकेश गोयल, सुश्री सुषमा गोयल (9899698240) संचालिका- सुश्री इंदू बंसल (011-32448401)

दिनांक : शनिवार 28 दिसंबर 2013, 11 जनवरी 2014

स्थान : जी-3 थर्ड फ्लोर,मित्रद्वीप अपार्टमेंट पटपड़गंज दिल्ली-92

समय : दोपहर 1 बजे से 5 बजे तक

संपर्क : श्री सुनील गर्ग, सुश्री संगीता गर्ग (9873349478) संचालिका- सुश्री मेघना गोयल (913677829)

श्री आदर्श कुमार सिंघल (9818525601)की अध्यक्षता में रविवार दिनांक **15 दिसम्बर 2013 को प्रात: 6.00 से 10.00** बजे तक श्री श्याम बाबा के दरबार में भगवान श्री कल्कि के कीर्तन का आयोजन कर रहे हैं। आप सभी धर्म अनुरागी एवं कल्कि भक्तों से विनम्र निवेदन है कि समय पर सपरिवार इष्ट मित्रों सहित इस मनभावन भक्तिमय सत्संग व भजनों का अनुपम आनंद लें।

तारीख:- रविवार, दिनांक 15 दिसम्बर 2013

स्थान:- दंगल मैदान, पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन के सामने,

समय:- प्रात: 6.00 बजे से प्रात: 10.00 बजे तक

भारत भूमि पर हमारा जन्म हमारे सौभाग्य की गाथा गाता है

भारत को एक सनातन राष्ट्र माना जाता है क्योंकि यह मानव सभ्यता का पहला राष्ट्र था। श्रीमद्भागवत के पंचम स्कंध में भारत राष्ट्र की स्थापना का वर्णन आता है। यहाँ के वासी चारों वेद (अथर्ववेद, सामवेद, यजुर्वेद एवं ऋगवेद), उपनिषदों, पुराणों का अध्ययन करते हैं व देवी देवताओं को मानते और उनकी पूजा करते हैं। भारतवर्ष कर्मभूमि है जबकि विश्व के दूसरे राष्ट्र भोग भूमि की श्रेणी में आते हैं, यहाँ पूर्ण परात्पर परब्रह्म परमात्मा महाविष्णु धर्म की स्थापना के लिए हर युग में अवतरित होते हैं। भारतवर्ष का इतिहास अत्यंत गौरवशाली है। हम भारतवासियों के पास परंपरा, संस्कृति और ज्ञान की अद्भुत धरोहर है।

जब जीरो दिया मेरे भारत ने, दुनिया को तब गिनती आई।
तारों की भाषा भारत ने दुनिया को पहले सिखलाई।
देता न दशमलव भारत तो चांद पे जाना मुश्किल था।
धरती और चांद की दूरी का अंदाजा लगाना मुश्किल था।
सभ्यता यहाँ पहले आई- पहले जन्मी है यहाँ पे कला।
अपना भारत वो भारत है जिसके पीछे संसार चला।
समय बढ़ता गया भारत गुलामी* की जंजीरों में जकड़ता गया तब श्री कल्कि ने अवतार लिया, दे अनुभव इसे उभार लिया। वे घोड़े चढ़ कर आएंगे भारत का मान बढ़ाएंगे,
बोलो जय जय जय श्री कल्कि पिता
बोलो जय जय जय कल्कि माता
*900 वर्ष मुगल राज 150 वर्ष अंग्रेज और 60 साल से काले अंग्रेज

लेकिन डोडो पक्षी की तरह..... ऐ मेरे वतन के लोगों परमहंस हो जाओ (भारतवर्ष के लोग परमहंस हैं यहाँ आतंकवादी आएं या दूसरे हमलावर इन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता)-यज्ञ शर्मा क्या परमहंस शब्दकोश में स्वाभिमान नाम का शब्द है ही नहीं जो हम गर्व से कहें कि हम हिंदू हैं हम हिंदूस्तानी है

देश गुलाम कैसे बनता है?

मैं भारत में काफी घूमा हूँ। दाएं, बाएं, इधर-उधर मैंने यह देश छान मारा और यहाँ मुझे एक भी भिखारी, एक भी चोर देखने को नहीं मिला।

यह देश इतना समृद्ध है और इसके नैतिक मूल्य इतने उच्च हैं और यहाँ के लोग इतनी सक्षमता और योग्यता लिए हुए हैं कि हम यह देश कभी जीत सकते हैं यह मुझे नहीं लगा।

इस देश की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक परंपरा इस देश की रीढ़ है और हमें यदि यह देश जीतना है तो इसे तोड़ना ही पड़ेगा। उसके लिए इस देश की प्रार्थना, शिक्षा पद्धति और संस्कृति बदलनी ही पड़ेगी। भारतीय लोग यदि यह मानने लगें कि विदेशी (विशेषत: अंग्रेजों) जो हैं श्रेष्ठ हैं अपनी स्वयं की संस्कृति से भी ऊंची है तो वे अपना आत्मसम्मान गंवा बैठेंगे और फिर वे वही बनेंगे जो हम चाहते हैं —एक गुलाम देश

2 फरवरी 1835 को ब्रिटेन की पार्लियामेंट में दिए गए लार्ड मैकाले के भाषण के कुछ अंश आभार : भारत स्वाभिमान ट्रस्ट फेस बुक

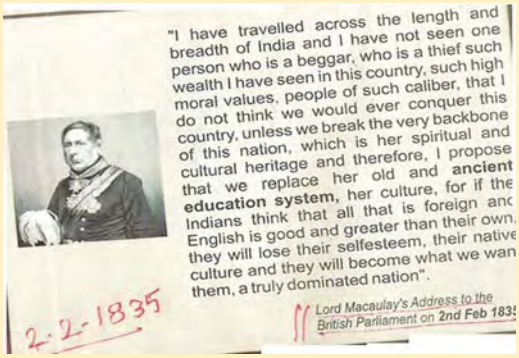
"I have travelled across the length and breadth of India and I have not seen one person who is a beggar, who is a thief such wealth I have seen in this country, such high moral values, people of such caliber, that I do not think we would ever conquer this country, unless we break the very backbone of this nation, which is her spiritual and cultural heritage and therefore, I propose that we replace her old and ancient education system, her culture, for if the Indians think that all that is foreign and English is good and greater than their own, they will lose their selfesteem, their native culture and they will become what we want them, a truly dominated nation".
Lord Macaulay's Address to the British Parliament on 2nd Feb 1835
2-2-1835

गूगल से ली गई प्रतिलिपि जिसमें लॉर्ड मैकाले की स्टेटमेंट छपी है

मारें भी और रोने न दें

महँगी पड़ी ओबामा प्रशासन पर टिप्पणी-पी.टी.आई.वाशिंगटन

बराक ओबामा प्रशासन के खिलाफ टिवटर पर गॉसिप फैलाने के आरोप में व्हाइट हाऊस के जिस स्टाफ को निकाल दिया गया था, वह भारतीय मूल के अमेरिकी नागरिक जोफी जोसफ हैं।

कितने सुरक्षित हैं आप जिनके घुटनोंपर सिर रखकर सो रहे हैं (अमेरिकी शटडाऊन)

दुनिया की अकेली महाशक्ति अमेरिका के ज्यादातर केंद्रीय कर्मचारी आज से घर बैठने पर मजबूर हुए। उनकी यह छुट्टी कब तक चलेगी इसके लिए उन्हें वेतन भत्ता मिलेगा या नहीं इन सवालों के जवाब अभी नहीं है। उन्होंने किसी अन्याय के विरोध में कोई हड़ताल नहीं की है। उनकी सरकार के पास उनको देने के लिए पैसे नहीं है इसलिए उन्हें छुट्टी पर भेजा गया है। अमेरिकी संसद के निचले सदन में विपक्षी रिपब्लिकन पार्टी का बहुमत है, जो राष्ट्रपति बराक ओबामा के हेल्थ केयर प्रोग्राम से सहमत नहीं है उसकी साफ राय है कि सरकार चलाने के लिए जरूरी रकम जारी करने के लेकर वह तभी राजी हो सकती है जब सत्तारूढ़ दल इस प्रोग्राम में उसकी मर्जी के बदलाव करने के लिए तैयार हो। किसी बाहरी व्यक्ति को यह सरकार की जिद लग सकती है कि विपक्ष की राय के सामने वह थोड़ा झुकने को तैयार क्यों नहीं हो जाती। लेकिन हकीकत कुछ और ही है। पिछले राष्ट्रपति चुनाव में ओबामा हेल्थकेयर नाम से चर्चित प्रोग्राम बहस का मुद्दा बना हुआ था। इस टकराव का ही यह नतीजा है कि आज अमेरिकी सरकार के पास सिर्फ अपनी फौज, एयर ट्रैफिक कंट्रोल और बाहर से आने वालों की सुरक्षा जांच जैसे बुनियादी महत्व के विभागों को छोड़कर और किसी भी विभाग को देने के लिए कुछ भी नहीं है। —आभार : नवभारत टाइम्स

शादी की रुकावट के लिये भूखों को खाना व हवन

-अज्ञात

मैंने अनुभव में मामाजी को सफ़ेद कुरता पजामा पहने हाथ में कागज और कलम लिये लिफ्ट में ऊपर जाते देखा। वह एक घर से दूसरे घर में अनुभवों का अर्थ बताने जा रहे हैं। मैं भी उसी लिफ्ट में उनके साथ जाना चाहती हूँ और जरा सी तेजी से चलकर चढ़ जाती हूँ। लिफ्ट में चढ़ने के बाद मैंने मामाजी से अपनी शादी के लिये पूछा तो उन्होंने बिना कुछ बोले मेरे उल्टे हाथ पर उपचार लिखने शुरु कर दिये- **हवन और भूखों को खाना।**

इतने में ही मेरी आँख खुल गई और मुझे बड़ा दु:ख हुआ कि भगवान मेरा अनुभव भी पूरा नहीं हुआ और उपचार भी रह गए।

अर्थ- आप जो भी शादी के लिये उपचार, प्रार्थना कर रही हैं वह पूरी नहीं है। जाने अनजाने अथवा अति आत्म विश्वास (ओवर कान्फीडेंस) के कारण दैवी व राक्षसी शक्तियों को अपना पूरा भाग नहीं मिल पा रहा है और जबकि आपका मानना है कि आप कल्कि जी की पूजा-उपचार पूरा कर रही हैं फिर भी आपकी शादी क्यों नहीं हो रही है? इसलिये भगवान ने आपसे बिना बोले और बिना दिखाए आपके हाथ पर लिखना शुरु कर दिया जिसे आप झुठला नहीं सकतीं। इस उपचार से आपको शादी के लिये रास्ता मिलेगा। बन पड़े तो शादी तक हवन व भूखों को खाना खिलाना मत छोड़ना।

उपचार: कल्कि जी के शुभ के रुपये से हवन व भूखों को रोटी में जितना बन पड़े पैसा लगाएं। हवन पिछले व इस जन्म के पापों को दूर करने में सहायक(बेहतरीन मददगार) होगा।

प्रार्थना: हे कल्कि जी अब मैं आगे से अनुभवों के अर्थ पूरा समझकर उपचार करूंगी। हवन व भूखों को रोटी दूंगी। मेरी शादी जहाँ आप चाहते हैं जल्द करा दें।

नोएडा बाल वाटिका में सुश्री मुक्ता शर्मा के तत्वाधान में 10 नवंबर 2013 को श्री कल्कि सहस्त्रनाम के 11 कुंडीय यज्ञ का आयोजन किया गया

भगवान श्री कल्कि का मनमोहक दरबार

सुश्री मुक्ता शर्मा कल्कि बाल वाटिका नोएडा के भैया देव शर्मा के साथ मंच से 11 कुंडीय हवन में श्री कल्कि सहस्त्रनामावली का उच्चारण करते हुए

भगवान श्री कल्कि के महोत्सव में सुसज्जित पंडाल में अनुशासित रूप में भक्तजन 11 कुंडीय हवन करते हुए

1 दिसंबर 2013 को संभल सुप्त तीर्थ जागरण अभियान के अंतर्गत सोम तीर्थ, गौ तीर्थ व सुदर्शन तीर्थ हेतु चामुंडा मंदिर में प्रतिमास की भांति श्री कल्कि सहस्त्रनाम यज्ञ संपन्न हुआ।

ग्रीन पार्क बाल वाटिका में सुश्री इंदू बंसल कुंडीय यज्ञ संचालित करवाते हुए

पेट नरम और माथा ठंडा

– मामाजी – 011-23868860

आज हम जिस अत्याधुनिक युग में जी रहे हैं उसमें कलियुग ने (खासतौर से कल्कि वालों को भोग विलास के साथ) वैभवता का जीवन जीने की ऐसी आदत डाल दी, कि हर व्यक्ति अधिक से अधिक धन कमाने के लिये अंधाधुन्ध दौड़ने के लिये मजबूर है। हर व्यक्ति के पास समय कम है जिसमें शारीरिक काम कम मांसिक परेशानियाँ बहुत ज्यादा हैं। इस कारण मनुष्य की फितरत मशीन जैसी हो गई है।

इसका सबका बुरा प्रभाव हमारे खानपान पर पड़ा। शुद्ध, स्वास्थ्य वर्धक, **पौष्टिक भोजन बनाने का एवं शांति से बैठकर खाने की** आज की युवा पीढ़ी के पास समय ही नहीं है। बरगर, पिज़ा * मजबूरी में माता-पिता को फोन पर आर्डर देकर अच्छी कंपनियों-मैकडोनेल्ड जैसों से मंगाना पड़ता है। जिन्हें ऐसी ही रेसिपी से बनाने पर विदेशों में काफी जुर्माना देना पड़ता था। पेस्ट्री, कुक्ड फूड, विशैली खाद्य से उत्पन्न खाद्य पदार्थ समय से पहले ही मनुष्य के शरीर को रोगी बनाकर मृत्यु के मुख में पहुँचा देते हैं। **ऐसी अवस्था में यदि कल्कि भक्त थोड़ा सा समय अपने लिये निकालें**- 45 मिनट योगाभ्यास के लिये, 10 मिनट अपने पाचन तंत्र को ठीक बनाए रखने के लिये, तो हम कई साध्य असाध्य रोगों से बच सकते हैं।

शरीर की 90 प्रतिशत बीमारियाँ पेट से अत्याधिक बेकार की सोच के कारण जन्म लेती हैं और पूरे शरीर में फैलती हैं। जबकि हमारे शरीर के अंदरूनी विशैले तत्वों के बाहर निकलने का एक मात्र जरिया मल (टट्टी) मूत्र (पेशाब) है।

हमारे खान पान की **गलत आदतों** की वजह से खाया हुआ भोजन सही तरह से नहीं पचता है, इसलिये मल के रूप में शरीर से बाहर भी नहीं निकल पाता एवं सूखकर हमारी * आंतों में जमा होता रहता है।

इस कारण धीरे-धीरे पेट के अंदर विशैले तत्व उतपन्न होने लगते हैं और धीरे-धीरे हमारे लीवर, किडनी, पैंक्रीयास, दिल, फेफड़े, ब्रेन के रोग पनपते हैं और शरीर बीमार होता जाता है जिसका संकेत शुरु में शरीर गाड़ी (कार) की तरह गर्म/बुखार (फीवर) थकावट से शुरु होती है।

सन् 1998 तक मैं पेट की कई बीमारियों गैस, आँव का होना जो सिर दर्द भी करती थी-बाय रूपी बवासीर-जिसमें प्रेशर देने के बाद मल तो नहीं निकल पाता था खून के प्रेशर से नस फूल जाती थी-जिसे बाय अथवा सूखी बवासीर कहते हैं। कालांतर इन्हीं फूली नसों (मस्सों) के कारण पतले बेजान होने पर इनसे खून पर प्रतिदिन प्रेशर पड़ने से खून निकलने लगता है। इसे खूनी बवासीर कहते हैं। इसके लिये हौंडा जैसी कई दवाइयाँ कैमिस्टों से लेकर मैंने इस्तमाल करी है। अब तो खूनी बवासीर भी मुझे बहुत तकलीफ़ (एक बार मल त्यागने में काफी खून आता था जो शरीर से ज्यादा दिमाग को पीड़ित करता था) पहुँचा रही थी।

ऐसे में मेरे कल्कि जी की कृपा से मैं ईस्ट ऑफ कैलाश टेम्पल के बिलकुल सटा कृष्णादत्त नैचुरोपैथी सेन्टर में लगभग 2 हफ़्ते रहा। वहाँ मुझे इस ऐनिमा किट के बारे में विस्तार से पता चला। आज इसके सही उपयोग से पेट संबंधी रोगों से मुझे छुटकारा मिला। वहाँ प्रतिदिन सेहत संबंधी सत्संग शाम 4 बजे से 5 बजे तक भी होता था। मेरे से ही नहीं सब से वे कहते थे कि गाँव वालों को आप सुबह शाम गाँव में जाते देखते हो तो मन को समझाओ कि जितनी बार खाओ उतनी बार जाओ। तो कम से कम दो बार तो जाओगे चाहो तो एक बार शाम/रात को भी इसका इस्तमाल कर सकते हैं। बहुत अच्छा प्रभाव अपने शरीर की प्रतिक्रिया पर पाओगे। मैंने उनसे प्रश्न किया डॉक्टर साहब किसके पास समय है कि दो बार मल त्यागने जाए।

जरा संकोच व शर्म छोड़कर तो देखें * कब्ज सब बीमारियों की जड़ है**

प्रात: काल सामान्य रूप में पहले आप टट्टी (मल त्यागने) जायें। बिना प्रेशर के जितनी टट्टी (मल) आए आने दें। ज्यादा देर अधिक मल आने की प्रतिक्षा में न बैठें। विदेशियों की तरह अखबार मलग्रह में बैठकर कभी न पढ़ें। सामने दिखाई मल निकासन (एनिमा किट) उपकरण का इस्तमाल लगभग एक घंटे बाद अथवा जब सुबह शाम समय मिले खाना खाने के आधा घंटा पहले अथवा एक घंटा बाद करके देखें। (विधि: एक मग में बहुत हल्का गर्म (गुनगुना) साफ़ जल लेकर सामने दिख रहा लाल पाईप मग में गेरें। काली नलिका पर लगी पतली पाईप की नोक पर सरसों का जरा सा तेल लगाकर देसी अथवा विलायती शीट पर बैटकर नलकी को गुदा (जहाँ से मल त्यागा जाता है) में धीरे धीरे लगभग 5 इंच अंदर ले जायें। फिर उल्टे हाथ की हथेली से पम्प को दबाते रहें। इससे जल गुदा में जाएगा। आप पाएंगे कि बिना प्रेशर से अंदर रुका मल, विशैली गैस, आँव जिसे नाभी के ऊपर मलगम और नीचे आँव कहते हैं स्वत: जल के साथ आ जाएगी। एक हफ्ते इसका प्रयोग करके आपको अच्छा लगे तो करें अथवा बंद कर दें।

मल निकासन अनीमा किट

शेष अगले पृष्ट पर

त्रेता युग की रामायण कहलाती राम की लीला, द्वापर युग में कान्हा ने खेली थी माखन लीला कलियुग में अब कल्कि जी की स्वप्नानुभवलीला

भगवान श्री कल्कि कलियुग में महाविष्णु के दसवें अवतार है। आप अपनी नियमित पूजा में भगवान श्री कल्कि का नाम जोड़ कर देखें इससे आपको अपने इष्ट देव की प्रसन्नता तो मिलेगी ही आपके द्वारा की जा रही पूजा को भी एक नई ऊर्जा एवं शक्ति मिलेगी। भगवान श्री कल्कि आपको स्वप्नानुभवों द्वारा मार्गदर्शन देंगे। इन स्वप्नानुभवों में भविष्य में आने वाली परेशानियों से बचने के उपाय और आपको अपने जीवन में पूर्व जन्मों के संचित पापों के कारण जो अच्छा नहीं मिल पा रहा है वह प्राप्त करने के उपाय भी आएंगे। बस आपको करना यह है कि भगवान श्री कल्कि के महामंत्र जय कल्कि जय जगत्पते पदमापति जय रमापते / बीज मंत्र जय श्री कल्कि जय माता की की एक माला का जाप नियमित करके उनसे प्रार्थना करें—हे श्री कल्कि भगवान गौ, विप्र, धर्म व सज्जनों की रक्षा कीजिए, भूमि का भार उतार दीजिए, कलियुग का नाश करके सत्युग की स्थापना कीजिए। हमसे अपना कार्य लीजिए। मुझे (अपनी परेशानियां कहें) रास्ता दीजिए। मुझे सपरिवार सुखी भाव से वैभवतापूर्वक आपके प्राकटय के प्रचार का कार्य करना है। दिखाए गए चित्र के अनुसार भगवान श्री कल्कि ने जिन बारह देवी-देवताओं का सुरक्षा कवच अपने भक्तों को प्रदान किया है स्वप्नानुभव के अर्थ के अनुसार संबंधित देवी देवताओं का एक रुपए दो बताशे से उनका भाग देकर प्रार्थना करें कि हमें कल्कि जी का काम करना है। * प्रार्थनाओं के लिए स्वप्नानुभव एक सम्पदा पुस्तक में पृ. 205-

अभी कल्कि क्यों?

वास्तव में तो कलियुग ने भगवान कृष्ण के समय में ही अपने पैर पसारने शुरू कर दिए थे (गदायुद्ध में दुर्योधन की जंघा पर वार करने पर कृष्ण-बलराम संवाद, धर्मराज के राज्य में सोने की मटकी को लेकर विवाद, उत्तरा के गर्भ पर अश्वथात्मा द्वारा ब्रह्मास्त्र चलाना और श्रीकृष्ण द्वारा परीक्षित को बचाना और उन्हीं राजा परीक्षित द्वारा कलियुग को सोने में रहने का वरदान देना आदि)

1.नेत्रहीनों को प्रकाशों को प्रकाशित करने वाला सूर्य भी प्रकाश नहीं दे सकता—हमारा विनम्र निवेदन है कि आप एक-एक वस्तु को गहराई से पढ़ें व समझें, बल्कि जब तक समझ नहीं आए हम आपके समक्ष प्रस्तुत हैं।

नेत्रहीन

सूर्य

2. भारत भूमि स्वयं श्री हरि नारायण का घर है— 900 साल मुगल साम्राज्य की गुलामी के बाद हम हिंदू 150 वर्ष तक अंग्रेजों के गुलाम रहे। उसी गुलामी में अंग्रेजों ने राशन में लाल गेहूँ हमें खाने को दिए और सफेद गेहूँ विदेशों में भेजे। जब उन्होंने देखा कि हिंदू तो सब कुछ सहन कर सकते हैं तो उन्होंने हम भारतीयों को कपड़ा भी नाप-नाप कर जेलखाने के कैदियों की तरह कपड़ा देकर सारी कमाई इंग्लैंड भेजने का विचार कर रहे थे तब ऐसा हिंदू जाति और हिंदू धर्म के सर्वनाश का उपक्रम देखकर इस देश के सच्चे स्वामी हिरण्यकश्यप, रावण व कंस के मारने वाले, गऊ, ब्राह्मण और धर्म की रक्षार्थ युग युग में अवतार लेने वाले महाविष्णु ने श्री कल्कि रूप धारण करने और कल्कि नाम का उद्घोष करने के लिए हनुमान जी को अपनी रहस्यमयी लीला का अनुभव देकर कलियुग की शेष आयु काटने के लिए कल्कि भगवान का पूजन एवं नामोच्चारण शुरू करवाया। (देखें श्री कल्कि के मानने वालों के गुरु श्री हनुमान जी / ठाकुर क्यों?)

3. कल्कि अवतार हो चुका है अब उनका प्रगट होना शेष है— श्रीमद्भागवत के बारहवें स्कंध के द्वितीय अध्याय में जहाँ महर्षि वेदव्यास जी ने कलियुग की आयु सीमा 4,32,000 वर्ष निर्धारित की है वहीं कलियुग के चौथे चरण के लक्षण पृथ्वी पर विद्यमान होने पर भगवान श्री हरि का कल्कि रूप में प्राकटय का संकेत भी दिया है। साथियों श्रीमदभागवत के अनुसार कलियुग के चौथे चरण के सभी लक्षण इस समय धरती पर साक्ष्य हैं। महाविष्णु का सिर्फ यही कल्कि अवतार ऐसा है जिसकी प्रगट होने से पहले सिद्ध पीठों-शक्ति पीठों व धामों में मूर्तियां लग रही हैं और विधिवत पूजा हो रही हैं देखें पृ 2। लेकिन यह विडंबना है कि भागवताचार्य एवं विद्वानजन इस सत्य से अवगत होते हुए भी इस सत्य को खुलकर नहीं बताते। वही छुपे रहस्य हम आपको बताने जा रहे हैं जिससे आप भी हमारी तरह चमत्कारी भगवान श्रीकल्कि की कृपा से असंभव कार्य संभव करा सकते हैं।

पृष्ठ 6 का शेष

आपकी जानकारी के लिये इससे न तो आंतों पर कोई बुरा असर पड़ता है और न ही शरीर को कोई एसी आदत पड़ती है कि इसका आप प्रतिदिन इस्तमाल करें। मैंने पिछले वर्षों से ऐसा पाया है। * देखें माधवाचार्य की पुस्तक क्यों? * *डॉक्टरी भाषा में इसे डाईसेन्ट्री कहते हैं।

*** शरीर में रुका मल कालान्तर में तरह तरह के नाटक दिखाता है। (यह लेख अगले अंक में पढ़ें) अधिक जानकारी के लिये—

बालक/पुरुष वर्ग- 9312533445, 9911033445, 9810227111 बालिकाएं/महिलावर्ग-9136377829,01132448401, 9811858723

Registered with the Registrar of Newspaper for India Under No. Delhi-N/2005/15596 Postal D. No. DL(DG)-11/8061/2012-2014

1 से 8 तक | 25 ग्राम | मूल्य 10 रुपए

क्या आप भी राजा रानी बनना चाहते हैं?

तो आएं अन्य राजा रानियों की तरह आप भी ऐसे चमत्कारी महाविष्णु भगवान श्री कल्कि की मूर्ति लगाने का विचार बनाइए और पाइए अन्य राजा रानियों की तरह अपने जीवन में भी आए प्रतिदिन बदलाव।

आश्चर्यजनक किंतु सत्य.....महाविष्णु का भगवान श्री कल्कि ऐसा चमत्कारी अवतार जिसके प्रकट होने से पहले सिद्ध पीठों और शक्तिपीठों में मूर्तियाँ लग रही हैं और विधिवत पूजा हो रही है

श्री कल्कि बाल वाटिका के सदस्य अग्रोहा धाम में बनने वाले श्री कल्कि संग्रहालय में कार्यरत

आप धर्म की रक्षा करें धर्म आपकी रक्षा करेगा - आप भी ऐसा धार्मिक कार्य चाहते हैं और आपके पास 2000 मीटर के करीब या कम स्थान हो तो श्री कल्कि संग्रहालय के लिए हम आपके सहयोग के लिए प्रस्तुत हैं

कल्कि संग्रहालय में आप देखेंगे

भारत भूमि पर हमारा जन्म सौभाग्य की गाथा गाता है। * *भारत भूमि श्री हरि नारायण की भूमि है।* * *भगवान विष्णु के दशावतार* * *अभी कल्कि क्यों?* * *कलियुग के चौथे चरण के लक्षण* * *कल्कि जी ने अवतार क्यों लिया?* * *हनुमान जी/ रामकृष्ण परमहंस हमारे गुरु क्यों?* * *प्राचीन भारत-आधुनिक भारत में अंतर* * *कल्कि जी की पुकार क्यों करें?* * *कल्कि जी की स्वप्नानुभव लीला* * *श्री कल्कि की पुकार ही सार है* * *कल्कि जी की भक्ति कैसे करें?* * *कल्कि जी का प्रचार कैसे करें?* * *धर्म/ भक्ति / ज्ञान और कल्कि* * *श्री कल्कि साहित्य*

ऑडियो सी.डी.

डी.वी.डी.

यू.एस.बी. | पैन ड्राइव

मंत्र बाक्स

श्री कल्कि जी का शुभ का खजाना

अपनी आमदनी में से कम से कम एक प्रतिशत अधिक से अधिक दस प्रतिशत रुपया भगवान श्री कल्कि के शुभ के खजाने में डालें।

इस खजाने को कहाँ लगाएं?— श्री कल्कि बाल वाटिका की संस्कार रोपण कार्यशालाओं, श्री कल्कि जी के हवनों, सत्संग, कल्कि जी के उपचारों में, कल्कि जी के महोत्सवों-कीर्तन, अनुभव गोष्ठी, मूर्ति स्थापना, शोभा यात्रा, कल्कि जी के उत्सवों में आने जाने मे, कल्कि जी के आगामी बनने वाले संग्रहालयों में एवं कल्कि जी के अन्य प्रचार के कार्यों में लगाएं। साहित्य में कम से कम 25 से 30 प्रतिशत अवश्य लगाएं, इससे आपके घर एवं व्यापार के प्रगति के मार्ग योजनाबद्ध तरीके से खुलते चले जाएंगे।

श्री कल्कि बाल वाटिका

चाँदनी चौक❖कसेरू वालान, पहाड़गंज ❖पालनपुर ❖देहरादून ❖असरोही ❖कोलकाता ❖चेन्नई

1903/3, पहली मंजिल, चाँदनी चौक, दिल्ली-110006 सम्पर्क : 23886646, 23866661

हाउस नं. 4116, कसेरू वालान, पहाड़गंज, नई दिल्ली-55, सम्पर्क : 23587079

सी 0-2/16, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली-110035

कॉलेज कम्पाउन्ड, गीता सोसाईटी, पालनपुर : 385001, गुजरात, सम्पर्क : 02742-258068, 09824968440

2 नम्बर, हाईट रोड, लिलुआ, हावड़ा-711204 (कोलकाता)

आभार/Ack.: श्री कल्कि पुराण, ऋग वेद, ऋषि प्रसाद, स्वामी राम सुखदास, नवभारत टाइम्स

योगेश प्रकाश गुप्ता, दिल्ली द्वारा प्रकाशित व अन्य बालकों के ज्ञानवर्धन हेतु

प्रिंटर्स : शिवानी ऑफसैट, ए-36, से.-8, नोएडा, गौतम बुद्धनगर (यू.पी.)

पारस प्रिंटिंग प्रेस, पटपड़गंज, नई दिल्ली

श्री कल्कि बाल वाटिका मासिक पत्रिका

के सदस्य बनने हेतु सम्पर्क करें—

☎ 9312533445, 9136377829, 9968314876

वार्षिक सदस्यता शुल्क : 120/- रुपए मात्र

न करने का न करवाने का झंझट बस फोन करते रहें

जब तक काम पूरा न हो

मंदिरों में भगवान श्री कल्कि जी की मूर्ति, पोशाक,

लाईट प्रभारी : हर्षित गुप्ता, अंकित गड़ौदिया,

अक्षय गड़ौदिया-9999885277